Original Research Paper History

अल्मोड़ा कुष्ठ आश्रम – एक विश्लेषण
(ALMORA KUSHTHA ASHRAM- EK VISHLESHAN)

Dr. (Mrs.) SMITA AGRAWAL

M.A.(History) (Rohilkhand University, Bareilly) M.Phil. (Ch. Charan Singh University, Meerut) Ph.D. (Jiwaji University, Gwalior)

ABSTRACT

सम्पूर्ण कुमाऊँ हिमालय की शाश्वत भूमि है, इसे देवभूमि कहकर संबोधित किया गया है। उत्तर भारत के कुमाऊँ क्षेत्र की सांस्कृतिक राजधानी अल्मोड़ा में अनेक बीमारियां फैली हुयी थी जिसमें व्यापक स्तर पर कुष्ठ रोग से पीडित व्यक्ति उपेक्षित एवं निराश्रित जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूर थे। कुष्ठ रोग से ग्रस्त व्यक्तियों को उनके परिजन घृणा की दृष्टि से देखते थे। मिशनरियों ने अल्मोड़ा में कुष्ठ आश्रम बनवाकर भारतीय जनता की सहानुभूति अर्जित की और उनके हृदय में सम्मान का भाव पैदा किया।

KEYWORDS : Kumaun, Almora, Leprosy, Leper, Asylum, Missionary

कुमाऊँ(Kumaun) अंचल का सर्वोत्कृष्ट नगर अल्मोड़ा (Almora) समुद्र तल से 1646 मीटर की ऊँचाई पर 3074 वर्ग–किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। यह क्षेत्र के केन्द्र में होने के साथ–साथ कुमाऊँ की सांस्कृतिक राजधानी भी है। सन् 1816 ई. में गोरखों की पराजय के बाद यहां अंग्रेजों का राज्य स्थापित हो गया। विशुद्ध स्वास्थ्य वर्धक जलवायु के होते हुए भी यहां अनेक बीमारियां फैली हुयी थीं जिसमें सबसे अपकारक बीमारी कुष्ठ रोग (Leprosy) कुमाऊँ पहाड़ियों के क्षेत्रों में फैली हुयी थी। जन–सामान्य का यह मानना था कि कुमाऊँ में रानीखेत व अन्य जगहों पर सैन्य क्षेत्र होने से 'सिफलिस' (Syphilis) बीमारी प्रारम्भ हुयी जिसकी वजह से कुष्ठ रोग में बढोत्तरी हुयी। कुष्ठ रोग में शरीर का प्रभावित होने वाला भाग पूर्णतः चेतनाशून्य हो जाता है। यदि रोगी के शरीर के ऐसे भाग पर पिन चुभाई जाए तो वह भाग संवेदनशून्य रहता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार कुष्ठ रोग से संबंधित प्रथम लिखित संदर्भ 600 ईसा पूर्व में मिला है।' सुश्रुत संहिता' और 'चरक संहिता' में कुष्ठ रोग का वर्णन मिलता है। युद्ध और व्यापार के कारण व्यक्तियों के एक–दूसरे के संपर्क में आने के कारण यह रोग एशिया, मध्य–पूर्व देशों, उत्तरी अफ्रीका और बाद में यूरोप और अमरीका में फैला।

सन् 1873 में नार्वे के Dr. Gerhard Henrik Armauer Hansen ने बताया कि यह रोग माइकोबैक्टेरियम लेप्री और माइकोबैक्टेरियम लेप्रोमेटॉसिस जीवाणुओं से होने वाला दीर्घकालिक रोग है। इस रोग को हैन्सन रोग के नाम से भी जाना जाता है। इसमें रोगी के शरीर पर घाव हो जाते हैं और तंत्रिकाएं क्षतिग्रस्त हो जाती हैं। प्राचीनकाल में इससे पीडित व्यक्ति को समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता था।

अल्मोडा का कुष्ठ आश्रम (Leper Asylum) भारत का सबसे प्राचीन कुष्ठ आश्रम है। इसका इतिहास सन् 1835 से प्रारंभ होता है जब एक नौजवान ब्रिटिश सेना अधिकारी सर हैनरी रैमजे को अल्मोड़ा में नियुक्त किया गया। वह नगर में कुष्ठ रोगियों की अत्यंत दुखद दुर्दशा देखकर द्रवित हो उठा। इस पर उन्होंने

इन दुखित कुष्ठ रोगियों के लिए कुछ करने का निर्णय लिया। सन् 1840 में उन्होंने 20 कुष्ठ रोगियों के लिए 'गनेश की गेयर' नामक स्थान में साधारण पत्थरों की झोपडियां बनवाई। कई वर्षों तक यहां पर उन्होंने अपने मित्र जनरल पार्सन के साथ 25 रोगियों की देखभाल की। सन् 1848 में वर्तमान सदर अस्पताल के निकट एक भवन लिया गया और इन रोगियों को अच्छे ढंग से रखने का प्रयास किया गया। यहां पर कुल 31 रोगी थे। नये रोगियों का आगमन निरंतर बढता जा रहा था जिससे इनकी व्यवस्था करना कठिन हो रहा था। इस कारण बेहतर प्रबंध और देखभाल के लिए भवन व अस्पताल की व्यवस्थाओं की जिम्मेदारी लंदन मिशनरी सोसायटी (London Missionary Society) के रेवरण्ड जे0एच0 बडन को सन् 1851 में सौंपी गयी। रोगियों की निरन्तर बढती हुयी संख्या के कारण अस्पताल छोटा पड़ जाने से पुनः कुमाऊँ के कमिश्नर सर रैमजे की सहायता से अल्मोड़ा कैंटोनमेंट के ठीक बाहर दक्षिण दिशा में पहाड़ी की ढाल पर अवस्थित वर्तमान अस्पताल बनाया गया। सन् 1854 में कुष्ठ आश्रम इस नवीन भवन में स्थानांतरित कर दिया गया। आरंभ में इस भवन में केवल 25 कमरे थे, परंतु समय–समय पर इसमें सुधार कार्य व विस्तार किया जाता रहा।

लंदन मिशनरी सोसायटी अस्पताल के प्रशासन व देखभाल हेतु सरकार व स्थानीय जनता से आर्थिक सहायता प्राप्त की जाती थी। सन् 1874 में 'मिशन टू लैपर्स' (Mission To Lepers) नामक एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन प्रारंभ हुआ जिसका उद्देश्य दुनिया से कुष्ठ रोग समाप्त करना था। सन् 1879 में इस संस्था ने कुष्ठ आश्रम को रूपये 2,400 वार्षिक अनुदान के रूप में देना प्रारंभ किया। नैनीताल के लाला मोतीराम शाह द्वारा इस आश्रम को रूपये 5,000 प्रदान किये। अल्मोड़ा के बद्रीदत्त जोशी द्वारा भी कुष्ठ आश्रम को मदद दी गयी। बाद में धनाड्य लोगों द्वारा भी वित्तीय सहायता प्रदान की जाने लगी। सन् 1864 में सर रैमजे ने हवालबाग स्थित सरकारी चाय बगान को इस कुष्ठ आश्रम को वित्तीय सहायता हेतु दे दिया था।

सन् 1925 ई. तक लंदन मिशनरी सोसायटी इस अस्पताल का प्रबंध करती रही। सन् 1925 में अल्मोड़ा का संपूर्ण मिशनरी कार्य मैथोडिस्ट चर्च को हस्तानंतरित कर दिया गया था। इस हस्तानांतरण में मैथोडिस्ट चर्च को भारत के सबसे पुराने कुष्ठ आश्रम की देखभाल की जिम्मेदारी मिली। सन् 1989 में कुष्ठ अस्पताल 'लेप्रोसी मिशन' के हवाले कर दिया गया।

कुष्ठ रोगी इस आश्रम में निःशुल्क भर्ती किये जाते हैं। आज भी यह अस्पताल कुष्ठ रोगियों की सेवार्थ हेतु कार्यरत है। अल्मोड़ा के इस अस्पताल ने उन रोगियों को नवजीवन दिया जो कुष्ठ रोग से पीड़ित होकर निकृष्ट जीवन जीने को मजबूर थे।

भारत सरकार द्वारा सन् 1955 में राष्ट्रीय कुष्ठ रोग नियंत्रण कार्यक्रम प्रारंभ किया। सन् 1983 में इसे 'राष्ट्रीय कुष्ठ रोग उन्मूलन प्रोग्राम' (NLEP) के रूप में बदल दिया गया जो वर्तमान में विश्व के सबसे बडे कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रमों में से एक है। वर्तमान में यह रोग शीघ्रता से उपचार योग्य है। आज मल्टीड्रग थेरेपी (MDT) द्वारा इसका इलाज संभव है, जो सभी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर निःशुल्क प्रदान किया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:–

1 एटकिन्सन, ई.टी. : हिमालयन गजेटियर, भाग–3,दिल्ली
2 वाल्टन, एच.जी.: अल्मोडा गजेटियर 1911, दिल्ली
3 वार्षिक संदर्भ ग्रंथ : भारत, सूचना व प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार
4 ब्रेडले बी.टी. : विजन एण्ड विक्टरीज इन हिन्दुस्तान, मद्रास, 1931
5 होलिस्टर, जे.एन. : दी सेन्चयूरी ऑफ दी मेथोडिस्ट चर्च इन सर्दन एशिया, लखनऊ
6 सांकृत्यायान राहुल : कुमाऊँ, 1951, बनारस।
7 केनेडी जेम्स : लाइफ एण्ड वर्क इन बनारस एण्ड कुमाऊँ, 1884 लन्दन एनुअल रिपोर्ट ऑफ दी लेप्रोसी हॉस्पिटल एण्ड होम अल्मोडा।
8 विश्व स्वास्थ्य संगठन (सितम्बर 2011)' लेप्रोसी अपडेट 2011' Weekly Epidemiological Record